## प्रकाशकीय

✶ आत्मसाधना

प्रस्तुत कृति मराठी केसमान 'सुमतिवाणी' (हिंदी) में भी पं.सुमतिबाई शहा की गरिमामयी साहित्यकार्य की महत्तम कडी है ।

पं. सुमतिबाईजी के८१ जन्मदिवस केअवसरपर प्रकाशित इस रचना का अंतरंग जीवन के चिरंतन सत्य की एक अनुपम उपलब्धि है । "जहॉ सुमति तहॉ संपत्ति नाना।" तुलसी की इस उक्ति की सार्थकता हमें इस रचना केकथ्य विषय की अनुभूति से ज्ञात होती हैं । "सुमतिवाणी" पं. सुमतिबाईजी केजीवन केस्वानुभूतियों की सूक्ति-बद्ध प्रस्तुती है ।" गागर मे सागर" के सशक्त उदाहरण केरुप में यह सुभाषित संग्रह है ।

सुक्तियों केसंग्रह अनेक प्रकाशित होते रहते है , परंतू अध्यात्मिक रंग से रंगी हुई एक सूक्ति भी सैकडो सामान्य सूक्तियोंकेतोल-मोल की होती है । ॐ कार का स्वरुप उसका प्रभाव उसकेवलय एवं वातावरण में होनेवाली सिद्धी आदी का सूक्ष्म चित्रण मंगलमय तो है ही , आत्म ज्ञान प्राप्ति केलिए वह प्रेरीत भी करता है । धर्म की संकल्पना साधारण ढंग से समझने की कोशीश नहीं करता , परंतू इस रचना में धर्म विषय से संबंधित सूक्तियॉं हमें धर्म की ओर प्रवृत्त करने में समक्ष है । भक्ति , श्रद्धा, विरक्ती, मौन , नम्रता , ज्ञान-अज्ञान , प्रेम , सत्य , अपरिग्रह आदि विषय हमें निश्चितरुप से सांसारिक कुमार्गो से हटाने प्रेरणा देते हैं । " परिग्रह विपत्ती मार्ग है ।" संतोषीवृत्ती सुख केमार्ग की ओर बढती है । आदि सुक्तियों से कौन प्रेरित नहीं होगा । अपने जीवन की धन्यता की ओर कौन नही ले जाएगा ? " समाज को आर्ष-सात्विक मार्गपर ले जानेवाली यें सूक्तियॉं आसमान केचमकते हुए तारा समूह हैं ।

नैतिक एवं आध्यात्मिक सामर्थ्य को बढानेवाली इस कृति की भाषाशैली कथ्य विषय के अनुरुप ओजस् एवं सात्विक गुणोंवाली है । विषय को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम है । अभिधा-व्यंजना अपने पूरे प्रभाव केसाथ प्रस्फुटित है ।

विघुलता शहा.

## अधूरा काम ; बिना बुझी आग

- ✶ किसी निश्चय पर पहुँचना यही मनन-चिंतन का प्रमुख लक्ष्य है, और जब बात का निश्चय हो गया तब उसे कार्यरुप में परिणत करने में विलम्ब करना बहुत बडी भूल है ।
- ✶ जिन कामों को तुम सावकाश कर सकते हो उन्हे पूर्णतया सोच-विचार केबाद करों ; किन्तु तत्कालोचित कार्यो केलिए एक क्षण भी देर मत करो ।
- ✶ यदि परिस्थिती अनुकूल हो तो सीधे अपने लक्ष्य की ओर चलो ; किन्तु यदि परिस्थिती अनुकूल न हो तो उस मार्ग को इख्तियार करो , जिसमें कम-से-कम बाधाओं-व्यधानों की आशंका हो ।
- ✶ अधुरा काम और अपराजित शत्रु दो ही बिना बुझी आग की चिनगारियों केसमान है ; वे निश्चय ही समय पाकर बढ जाएँगे और उस असावधान व्यक्ति को आ दबोचेंगे ।
- ✶ किसी भी कार्य को करते समय पाँच बातों का पूरा-पूरा ध्यान रखो । उपस्थित साधन, उपकरण , कार्य का स्वरुप , समुचित समय , और कार्यस्थल।
- ✶ काम करने में कितना परिश्रम होगा , मार्ग की कितनी बाधा आयेंगी , कितने लाभ मिलेंगे - इन सब बातों पर पहले विचार कर लो , पीछे उस काम को साथ में लो ।
- ✶ किसी भी काम में सफलता प्राप्त करने या एकमेव मार्ग यह कि जो व्यक्ति उसे करने में दक्ष हो उससे काम का रहस्य ज्ञात कर लो ।

-छाया । तिरुक्कुरल । आचार्य कुन्दकुन्द

(श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी (राजस्थान ) द्वारा प्रचारित )